"आर्त शांति: फला विद्या"

क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल , देहरादून

स्थापना दिवस विशेषांक

अंक: 3: अक्टूबर ,2022

सम्पादिका की कलम से...

प्रिय पाठकगण ,

65 वें स्थापना दिवस की आप सभी को शुभकामनाएँ! वर्ष २०२२ का नवप्रभात भारतीय स्वतंत्रता के ७५ वर्षों की गौरवशाली यात्रा के रूप में अमृत महोत्सव ले कर समुपस्थित हुआ और प्रत्येक भारतीय स्वतंत्रता के अमृत में आकंठ निमग्न हो गया। इन नवीन विचारों एवं संकल्पों का अमृत केवल भारतवर्ष में ही नही अपितु हमारे विद्यालय में भी दर्शनीय था। यह एक अद्भुत संयोग ही है कि वर्ष २०२२ में ही हमारा विद्यालय अपना 65 वाँ स्थापना दिवस मना रहा है। पिछले दो वर्षों में हमने अपना स्थापना दिवस वर्चुअल रूप से मनाया था किन्तु इस वर्ष एक नए उत्साह के साथ स्थापना दिवस विद्यालय परिसर में ही आयोजित किया जा रहा है, जो कि हम सभी के लिए अति प्रसन्नता का विषय है। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अक्टूबर का यह माह आनन्दोत्सव मनाने के लिए पुनः वैल्हम में उल्लास की बयार ले कर आया है। यही वह विशिष्ट माह है, जब बुराइयों के प्रतीक रावण का दहन होता है और सर्वत्र दीप जगमगाते हैं, साथ ही स्थापना दिवस के रमणीय आयोजन पर विद्यालय का आँगन रोशनी से सराबोर हो जाता है। हम वैल्हमाइट्स के लिए स्थापना दिवस वह सुंदर उत्सव है जिसके उल्लास और उमंग के रंग में हम सभी सराबोर हो उठते हैं। इस शुभ अवसर पर मुझे अपनी हिंदी पत्रिका क्षितिज का तृतीय अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हो रहा है, जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

मेरे लिए हिन्दी भाषा और साहित्य सदैव महत्वपूर्ण रहा है। यह भावना और अधिक प्रबल हो गई जब विद्यालय द्वारा मुझे प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती गगन गिल जी से चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ ।उनसे मिलने के पश्चात ही हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति मेरी रुचि और अधिक वृद्धिंगत हुई और हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम भी बढ़ गया ।

मैं चाहती हूँ कि आने वाले समय में भी क्षितिज आप सभी का साहित्य के प्रति प्रेम जीवित रखे और भावों का रसास्वादन करवाता रहे। मैं अपने सहायक मंडल को विशेष रूप से धन्यवाद देती हूँ क्योंकि आप सभी ने क्षितिज को सफल बनाने में अपना मौलिक और रचनात्मक सहयोग दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सदैव क्षितिज को अपने असीम प्रेम एवं निष्ठा से प्रकाशित करते रहेंगे। अंत में धन्यवाद उन सभी पाठक गणों का जो निरंतर क्षितिज पढ़ने के लिए व्यग्र रहते हैं। आशा करती हूँ कि क्षितिज इसी प्रकार से नित आपका प्रेम प्राप्त करता रहेगा।

मनस्वी पंत

संपादिका

अनुक्रमणिका ..

पृष्ठ 1: सम्पादिका की कलम से

पृष्ठ 2: मन के हारे हार हैं मन के जीते जीत
दीपावली: प्रकाशोत्सव

पृष्ठ 3 : अहिल्या का पत्र :श्री राम के नाम
गौरव के क्षण /हाउस राशिफल

पृष्ठ 4: कहानी देश की पहली महिला डॉक्टर आनंदीबाई जोशी की
हवा का झोंका/ स्थापना दिवस

पृष्ठ 5: चाँद की है कोई मजबूरी या स्वयं का प्रकाश है जरूरी
ये रोज रोज की कहानी / कहानी गोल गप्पों की /नजर और नजरिया

पृष्ठ 6: यादों के पन्नों से

पृष्ठ 7: बचपन की यादें वैल्हम की बातें/ पोल खोलक यंत्र / दौर

पृष्ठ 8: विज्ञान देवता की आरती/बूझो तो जानें / सुर्खियां

सकारात्मकता

मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत

"जो भी परिस्थितियाँ रहें , काँटे चुभें कलियाँ खिले,
हारे नही इंसान, संदेश यही जीवन का मिले।"

मनुष्य किसी भी सफलता को पाने के पूर्व हार क्यों जाता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उसका मन हार जाता है। इस कारण वह सफलता पाने का पूरा प्रयास नही कर पाता है। वही व्यक्ति विजयी होता है, जिसने अपने मन को जीत लिया है। हमारे समक्ष ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनमें मन की संकल्प–शक्ति के द्वारा व्यक्तियों ने अपनी हार को विजयश्री में परिवर्तित कर दिया। महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की विजय का कारण यही था कि श्रीकृष्ण ने उनके मनोबल को दृढ़ कर दिया था। नचिकेता ने न केवल मृत्यु को पराजित किया, अपितु यमराज से अपनी इच्छानुसार वरदान भी प्राप्त किए। अल्प साधनों वाले महाराणा प्रताप ने अपने मन में दृढ़–संकल्प करते हुए मुगल सम्राट अकबर से युद्ध किया। शिवाजी ने बहुत थोड़ी सेना लेकर ही औरंगजेब के दाँत खट्टे कर दिए। द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका द्वारा किए गए अणुबम के विस्फोट ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी दो नगरों को विनष्ट कर दिया था, किन्तु अपने मनोबल की दृढ़ता के कारण आज वही जापान विश्व के गिने–चुने शक्तिसम्पन्न देशों में से एक है। इस प्रकार के कितने ही उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जिनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हार–जीत मन की दृढ़ता पर ही निर्भर है। द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी कहते हैं - मन के हारे हार सदा रे, मन के जीते जीत,

मत निराश हो यों, तू उठ, ओ मेरे मन के मीत।
माना पथिक अकेला तू, पथ भी तेरा अनजान,
और जिन्दगी भर चलना इस तरह नही आसान।
पर चलने वालों को इसकी नही तनिक परवाह,
बन जाती है साथी उनकी स्वयं अपरिचित राह।

शाम्भवी चंद्रा
कक्षा 10

पर्व –विशेष

दीपावली: प्रकाशोत्सव

"तमसो मा ज्योतिर्गमय "अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने की यह शिक्षा देता है,दीपावली का पर्व। दीपावली की रात झिलमिलाते एवं जगमगाते दीप हमारे जीवन की अनंत खुशियों के पर्याय तो हैं ,साथ ही आस्था और सकारात्मकता के प्रतीक भी हैं।

भगवान विष्णु ने त्रेता युग में भगवान श्रीराम के रूप में जन्म लिया था जिनका उद्देश्य केवल दुष्ट रावण का वध करना ही नही अपितु संपूर्ण मानव समाज को एक संदेश देना था। उनके जीवन की हर एक घटना हमे एक शिक्षा देकर जाती हैं। इन्ही शिक्षाओं को आत्मसात करने के लिए हम दीपावली का पर्व हर वर्ष मनाया जाता हैं।इस पर्व से हमें रामायण की मिली शिक्षाओं को ग्रहण करने व आने वाली पीढ़ी में भी उन्ही गुणों का निर्माण करने की प्रेरणा मिलती हैं।

विक्रमी संवत् का शुभारंभ भी दीपावली से ही माना जाता है, जब विक्रमादित्य का राज्याभिषेक हुआ था। भारतीय अध्यात्म को विदेशों में प्रचारित-प्रसारित करने वाले युवा संन्यासी स्वामी रामतीर्थ के जीवन से दीप पर्व का विशेष संबंध है। उनका जन्म, संन्यास और महानिर्वाण दीपावली के दिन ही हुआ था। अतः उन्हें अपना आदर्श मानने वाले राम प्रेमी इस पावन पर्व को 'रामदिवस' के रूप में मनाते हैं। ऋषि दुर्वासा के श्राप से जब स्वर्ग श्रीविहीन हो गया तो देवी लक्ष्मी भी वहाँ से चली गईं। तब भगवान विष्णु के कहने पर देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन किया। इसमें से कई रत्न निकले, साथ ही देवी महालक्ष्मीजी भी उत्पन्न हुईं। उस समय भगवान नारायण और लक्ष्मीजी का विवाह हुआ, तबसे दीपावली मनाई जा रही है। द्वापरयुग में राक्षस नरकासुर ने 16 हजार स्त्रियों का अपहरण कर लिया था, तब भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया और उन सभी को मुक्त किया। कृष्ण भक्तिधारा के लोग इसी दिन को दीपावली के रूप में मनाते हैं। जैन धर्म के पूजनीय और आधुनिक जैन धर्म के संस्थापक ऋषभदेव के द्वारा दीपावली के दिन ही निर्वाण प्राप्त किया गया था।

इस प्रकार दीपावली मनाने के पीछे अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। वास्तव में दीपावली के पर्व से न केवल धार्मिक अपितु आध्यात्मिक ज्ञान भी प्राप्त होता हैं। आज के समाज में जहाँ कटुता, शत्रुता, ईर्ष्या इतनी अधिक बढ़ गयी हैं वही दीपावली संदेश देती हैं कि मनुष्य को अपने सभी स्वार्थों का त्याग कर केवल धर्म का पालन करना चाहिए व किसी का भी अहित नही करना चाहिए साथ ही अपने कर्तव्य के पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए। दीपावली मनाने की सार्थकता तभी है ,जब भीतर का अज्ञान और अंधकार दूर हो। अंधकार जीवन की समस्या है तो प्रकाश उसका समाधान। तो आईए इस दीपावली पर सर्वत्र प्रकाश फैलाएँ और प्रेम के दीप जलाएँ।

-वाणी पहुजा
कक्षा 10

नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
ऊषा जा न पाए, निशा आ ना पाए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

–गोपालदास "नीरज"

अहिल्या का पत्र :श्री राम के नाम

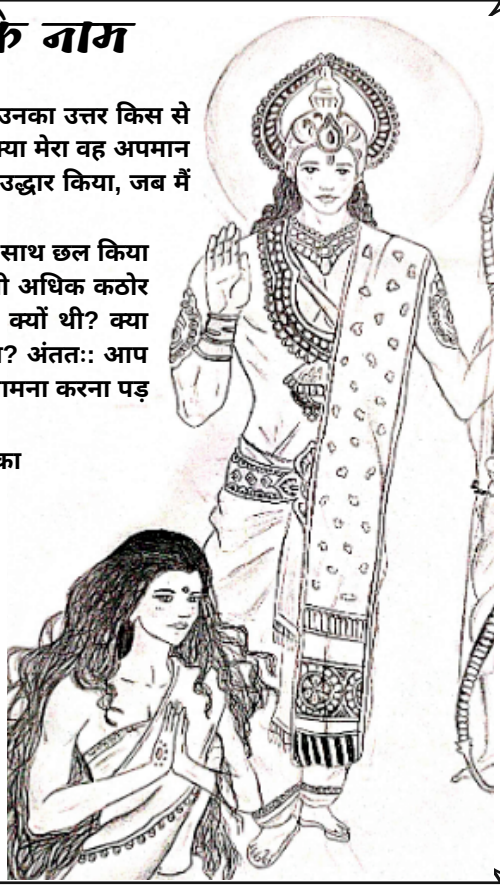

प्रिय राम,

आपने मेरा उद्धार किया, लेकिन कुछ प्रश्न मेरे हृदय को आज भी विचलित कर रहे हैं। उनका उत्तर किस से प्राप्त करूँ, यह समझने में असमर्थ हूँ और आपकी ही शरण में आई हूँ। पति द्वारा किया गया क्या मेरा वह अपमान उचित था? और क्या मेरा श्रापित होना उचित था? आज भी समाज कहता है कि आपने मेरा उद्धार किया, जब मैं पतित ही नहीं थी तो क्या मेरा पत्थर बन जाना उचित था ?

वर्षों तक जिस दंड की भागी मैं बनी रही क्या वह दंड उस पुरुष के लिए भी नहीं था जिसने मेरे साथ छल किया ? मेरे पति का रूप धर कर मुझे छलना और समाज का मुझे ही गलत ठहराना क्या उस से भी अधिक कठोर नहीं था? श्राप मुक्त होने के लिए मुझे किसी पुरुष के ही चरणों के स्पर्श की आवश्यकता क्यों थी? क्या वास्तव में मैं इतनी बड़ी अपराधिनी थी ? क्या किसी को भी मुझे शापित करना न्यायसंगत था? अंततः: आप ही के चरणों ने मुझे फिर मानव रूप दिया? श्राप मुक्त होकर भी तो मुझे पुन: इसी समाज का सामना करना पड़ रहा है। यदि अभी भी समाज की यह दशा है तो मैं उसी पत्थर के रूप में ठीक थी।

नहीं चाहती मैं कि कोई पुरुष मेरा उद्धार करे और बिना किसी अपराध के एक मूक शिला का श्राप दे, क्योंकि अबला नहीं हूँ मैं ! मैं तो शक्ति स्वरूपा हूँ! यह स्वप्न देखा है मैंने, कि मुझे नारी को उसकी खोई पहचान फिर से लौटानी है।

मूक दर्शक बन कर जीवन नहीं जीना मुझे। आप ही मुझे बताइये कि यह समाज स्त्रियों को सम्मान देना कब सीखेगा, मेरा अस्तित्व कब वापस लौटाएगा, क्या मैं हमेशा किसी पुरुष की छाप बन कर ही रह जाऊँगी अथवा इस पिछड़ी सोच वाले समाज को विकास का मार्ग दिखा पाऊँगी। आप ही बताइये राम! आप ही बताइये!

आपकीशरणार्थी

अहिल्या

समृद्धि
कक्षा 11

गौरव के क्षण

प्रधानाचार्य श्रीमती विभा कपूर को उनकी सेवाओं के लिए "उत्तराखंड गौरवी पुरस्कार" द्वारा, सम्मानित किया गया।

हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ नालंदा पाण्डेय को हिन्दी भाषा एवं साहित्य में विशिष्ट योगदान देने हेतु गुरु फाउंडेशन द्वारा आचार्य चाणक्य सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया।

हाउस राशिफल

बुलबुल के लिए अक्टूबर का माह बहुत सुखद रहेगा। सोशल मीडिया पर किसी के साथ बातचीत शुरू हो सकती है और वे आपके अच्छे दोस्त भी बन सकते हैं। ऐसे में शुरूआती समय में व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें अन्यथा बाद में आपके लिए समस्या हो सकती है।

इस माह फ़्लाईकैचर पर मंगल भारी है तथा कम मेहनत से ही सफलता मिलने का संकेत हैं। अतः अकैडेमिक कप की तरफ़ भागने की कोशिश न करें।

इस माह के दौरान हूपूस अपने पुराने मित्रों से बातचीत कर सकते हैं जिससे मन भावुक हो सकता है। किसी से बात करते समय अपने शब्दों के चुनाव पर ध्यान दें तथा कटु वचन कहने से बचें नही तो बेड मार्क्स की वर्षा होने की सम्भावना है।

इस माह औरियल के ऊपर शनि की दृष्टि हैं जिसके कारण सभी के बीच प्रेम में कमी आएगी। सदस्यों के बीच किसी पुरानी बात को लेकर लड़ाई-झगड़ा होने की संभावना हैं। ऐसे में धैर्य रखकर दूसरे हाउस को अपना टक बाँटे ताकि आप अपने रिश्तों में सुधार ला पाएँ।

वुड्पेकर हाउस में किसी न किसी चीज़ को लेकर विपत्ति आती रहेगी। मन में कोई आशंका आए तो इसे अपने करीबी सदस्य के साथ सांझा करें। समय का ध्यान रखना अत्यधिक महत्वपूर्ण होगा अन्यथा हाथ से मार्चिंग कप पल भर में छू मंतर हो जाएगा।

-रितिज्ञा अग्रवाल एवं शाम्भवी चंद्रा
कक्षा 10

कहानी देश की पहली महिला डॉक्टर आनंदीबाई जोशी की

आनंदीबाई जोशी को भारत की पहली महिला डॉक्टर होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने 18वी सदी में महिला डॉक्टर बनकर नया इतिहास रच दिया था। विषम परिस्थितियों में उन्होंने हिम्मत नही हारी और शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ी। विदेश में शिक्षा प्राप्त कर वे भारत की पहली महिला डॉक्टर बनी थी। डॉक्टर आनंदी गोपाल जोशी का जन्म 31 मार्च 1865 को पुणे में हुआ था। मात्र 9 वर्ष की आयु में उनका विवाह 25 साल के गोपाल राव जोशी से हो गया था। 14 वर्ष में आनंदी माँ बन चुकी थी।

दुर्भाग्यवश 10 दिनों के भीतर ही उनके नवजात शिशु की मृत्यु हो गई। इस दुख ने आनंदी को बहुत पीड़ित किया और उन्होंने डॉक्टर बनने की ठान ली जिससे उनकी तरह किसी और माँ को इस वेदना का सामना न करना पड़े। आनंदी गोपाल जोशी डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई करने लगी जिसमें उनके पति ने उनका पूर्ण सहयोग किया। यह वह समय था जब समाज में उनकी आलोचना भी होती थी,किन्तु आलोचनाओं के साथ ही उन्होंने अपनी पढ़ाई को महत्व दिया।। 886 में उन्होंने केवल 21 वर्ष की आयु में एमडी की डिग्री हासिल की। एमडी की डिग्री हासिल कर डॉक्टर बनने वाली वह भारत की पहली महिला डॉक्टर बनी। डॉक्टर बनने के बाद उन्होंने समाज की सेवा के लिए अनेक सपने संजोए थे। किन्तु भाग्य को कुछ और ही स्वीकृत था। भारत की पहली महिला डॉक्टर बनने का कीर्तिमान स्थापित करने वाली आनंदीबाई गोपाल टीवी की बीमारी का शिकार हो गयी और दूसरों का इलाज करने से पहले ही वे स्वर्ग सिधार गयी। आनंदीबाई ना केवल भारतवर्ष के लिए अपितु सम्पूर्ण विश्व की महिला समाज के लिए आदर्श बनी। उनकी जीवनी पर कैरोलिन वेलस ने 1888 में एक बायोग्राफी भी लिखी थी। इसी बायोग्राफी के आधार पर एक सीरियल भी बनाया गया था जिसे दूरदर्शन पर आनंदी गोपाल के नाम से प्रसारित किया गया था।

साँची मलपानी
कक्षा 7

हवा का झोंका

मेघ बरसे, वृक्ष थिरके,
कई यादें साथ उड़ा लाया।
एक हवा का झोंका आया।।

मस्तिष्क की गीली माटी पर,
यादों का बीज बोया,
चेहरे पर एक मीठी मुस्कान पिरोकर।
एक हवा का झोंका आया।।

बसंत ऋतु में नवीन कुसुमों,
सी स्मृतियाँ खिलाकर,
मन को मोहने वाला।
एक हवा का झोंका आया।।

कभी नेत्रों में धूल झोंकी ,
तो कभी बालों को सहलाया,
खट्टी- मीठी यादों भरा।
एक हवा का झोंका आया। -

आर्या शर्मा
कक्षा 7

जूनियर प्रोडक्शन की तैयारी के दौरान नटखट उपमा मैम का हास -परिहास

रीतिज्ञा अग्रवाल कक्षा 10

स्थापना दिवस

विद्यालय का पैसठवाँ स्थापना दिवस है आया , सभी के मन
को जिसने है हर्षाया ,
मिस लिनेल ने रखी थी जिसकी नीव,
वह विद्यालय है हमारे लिए सजीव।
नसरीन, पीकॉक थ्रोन आँगन हैं जिसकी पहचान,
पैंसठ सालों से वह है वैल्हम की आन बान और शान ,लहराएंगे
इसका परचम हरदम ऊँचा
क्योंकि इसके प्रति हमारा प्रेम है एकदम सच्चा।

आद्या
कक्षा 7

आप सच्चे वैल्हमाइट हैं यदि -

- असेंबली से ठीक पहले आपकी तबियत हो जाए खराब
- मिल जाए आपके पास टक का खजाना
- गुलाबजामुन माँगे दिल बार- बार
- हर दो मिनट में बाल हों हवा में लहराते
- अस्पताल जाने का हरदम हो बहाना
- इन्टर स्कूल जाने के लिए रहें हमेशा तैयार
- चश्मा रहे आँखों से दूर सिर के ऊपर

चाँद की है कोई मजबूरी या स्वयं का प्रकाश है जरूरी !

रात्रि में चमकता हुआ चाँद अप्रतिम लगता है, किन्तु क्या चाँद में इतना ही सौन्दर्य है अथवा यह चमक किसी और की ही है। प्रश्न यह उठता है कि क्या स्वयं का अस्तित्व और स्वयं की सही पहचान संसार को दिखने पर ही निर्धारित है? चंद्र है वह जिसका स्वयं का प्रकाश नही होता तथापि अपनी चाँदनी से वह संसार को मोह लेता है वही दूसरी ओर है सूर्य जिसका स्वयं का प्रकाश होते हुए भी वह नेत्रों को शीतलता नही दे पाता है। देखा जाए तो चंद्र और सूर्य मनुष्यों से भिन्न नही हैं। कुछ लोग अपनी असली पहचान समाज को दिखाने में संकोच करते हैं इसके अतिरिक्त कुछ लोग दूसरे व्यक्तियों का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करते हैं और फिर उनको श्रेय भी नही देते और तो और उनकी मदद लेकर उनको ही भूल जाते हैं और एक परछाई बनकर रह जाते हैं।

वे चाँद के समान दूसरों से प्रकाश ले कर उनके अस्तित्व को ही अपना बना लेते हैं क्योंकि वे इस बात से परिचित हैं कि वे समाज को स्वयं के बल पर कभी भी प्रसन्न नही कर सकेंगे अतः वे अपनी वास्तविकता को ही छिपा देते हैं जिससे उनका व्यक्तित्व किसी के समक्ष न आ सके। उनकी पहचान, जो पूर्ण रूप से उनकी नही होती एक ऐसी छाप छोड़ जाती है जिसे मिटाना असंभव सा हो जाता है। ऐसे लोग चाँद की तरह लोगों के अंतर्मन को शान्ति प्रदान करते हैं। तो क्या इसके बाद भी आप यही कहेंगे कि परदे के पीछे रहना एक महान कार्य है। अब आप इसको कैसे समझते हैं ,यह आप पर निर्भर करता है।

समायरा भाटिया- कक्षा 8

हम वैल्हमाइट्स की रोज-रोज की कहानी

हर दिन सुबह घंटी के टन-टन करने का कारण, बच्चों के नेलकटर ढूँढने का कारण, अपने डॉम से बस्ता लेकर कक्षा की ओर भागने का कारण, अपने बैज ढूँढने का कारण और ठीक से बाल बनाने की कोशिश करने का कारण, सब मॉर्निंग इंस्पेक्शन के कारण ही तो होता है। मॉर्निंग इंस्पेक्शन वैल्हमाइट्स के लिए ऐसा समय होता है जब उनका प्रयास होता है कि कम से कम 10 मिनट के लिए ही सही ,अपनी एचएम के सामने साफ-सुथरे दिखें जिससे उन्हें अपने डॉम वापस जाने की मेहनत न करनी पड़े। इंस्पेक्शन की लाइन में घुसते ही सबसे पहले मेसी की डाँट सुनने को मिलती है। जब हम नए नवेले आए थे तब तो हमें अपने सीनियर्स की बातों का पालन करना ही पड़ता था। पर अब जब हम स्वयं सीनियर बन गए हैं, तो भी अक्सर कहना पड़ता है कि "प्लीज आज छोड़ दो! मैं कल अपने नाखून पक्का काटकर आ जाऊँगी " और हमारे प्यारे मेसी मित्र अपनी दोस्ती का पूरा फर्ज निभाते हैं।

इसके अतिरिक्त कई बार तो हम अपने जूतों को पॉलिश करना भूल जाते हैं और इस आशा के साथ आगे बढ़ते हैं कि हमारी एचएम की नजर उन गंदे जूतों पर न पड़े। शायद वेलहैमाइट के अंदर ऐसे शक्ति होती है जिसे 'सिक्सथ सेंस' कहते हैं।जैसे ही हमें पता चलता है कि अब एचएम की नजरें जूतों पर पड़ने ही वाली हैं हम शीघ्र ही उन्हें अपनी सलवारों के पीछे पोंछ कर काम चला लेते हैं। वैसे मॉर्निंग इंस्पेक्शन का जोश उस दिन मिलने वाले नाश्ते पर भी निर्भर करता है। जैसे कि शुक्रवार को हमारा जोश दर्शनीय होता है क्योंकि उस दिन स्माइलीज जो मिलती हैं । नाश्ते के बाद दिन का आरंभ होता है ,असेंबली से जहाँ पर भी हम एच एम से मनुहार करते हैं दो पल बैठ जाने कीकभी कभी तो उनको भी हम पर दया आ जाती है और हम आराम से बैठ कर प्रार्थना कर लेते हैं लेकिन कई बार चक्कर खा कर गिरना भी होता है। तो यह तो है हम वैलहमाइट्स कि रोज रोज की सुबह की कहानी। शेष कहानी अगले अंक में .....

अनिका मोहन
कक्षा 8

कहानी गोल गप्पों की

बंगाल के पुचका, हरियाणा के पानी-पताशी, मध्य प्रदेश की फुल्की, आसाम की पुष्का या ओडिशा की गुपचुप, गोलगप्पे का नाम स्थान के साथ बदलता जरूर हैकिन्तु उसका स्वाद सर्वत्र एक समान ही रहता है। भारतवर्ष की हर गली, हर मोहल्ले में चाहे भारतीय हो या नही, लेकिन गोलगप्पे जरूर होते हैं। क्या आप जानते हैं कि इसका संबंध महाभारत काल से है, जब पहली बार द्रौपदी ने पांडवों के लिए पानीपुरी बनाई थी।

उस समय पांडव वनवास में थे। कुंती ने द्रौपदी को कुछ बची सब्जियाँ तथा एक पूरी का आटा देकर कहा कि वे कुछ ऐसा बनाएँ जो उनके सभी बेटों का पेट भर दे और द्रौपदी ने यही व्यंजन बनाया।

एक दूसरी कथा के अनुसार गोल गप्पे मगध के राज्य में पहली बार बनाये गए थे। उस समय बनाये जाने वाले अन्य पकवान जैसे चितबा, तिलबा आदि के साथ 'पुलकीस' के नाम से गोल गप्पे भी विकसित हुए। इन्हें बनाने वाले का नाम इतिहास के पन्नो में खो गया, परंतु उसकी कलाकारी भारत की हर गली में छा गई।

और इन गोल गप्पो का क्या कहना ! गोल खोकली पूरी, सुगंधित पानी, इमली की सोंठ, आलू, प्याज या छोले से युक्त यह वह शक्ति है, जो एक ठेले पर शहर से सबसे गरीब निवासियों के साथ गाड़ियों से निकलते अमीर से अमीर बिजनेस मेन को भी खड़ा कर देती है!

भव्या संघल
कक्षा 11

नजर और नजरिया

नजर सिर्फ देखती है
तो नजरिया दिखता है।

नजर एक खिड़की है, एक दरवाजा है,
तो नजरिया हवा है, धुप है।

नजर अगर हकीकत है
तो नजरिया हमारा प्रतिबिम्ब है।

नजर कभी गलत नही होती, लेकिन
नजरिया बमुश्क़िल सही होता है।

-वान्या गुप्ता

यादों के पन्नों से

एक मुलाकात हमारी पूर्व वैल्हमाइट सेहर नूर के साथ

इस बार हमने मुलाकात की आकर्षक, उत्साही और एक उत्कृष्ट नृत्यांगना, 2011 के बैच से,सहर के साथ जो कि भूतपूर्व वैल्हमाइट तो हैं ही साथ ही विद्यालय में आई हैं जूनियर प्रोडक्शन की उत्कृष्टता में चार चाँद लगाने। आइए इस साक्षात्कार के माध्यम से आपको वेल्हम में उनके जीवन से रूबरू कराते हैं।

आपकी नृत्य यात्रा वैल्हम से कैसे जुड़ी है?

मैं नृत्य आठ साल की उम्र से कर रही हूँ। परन्तु मेरा औपचारिक प्रशिक्षण वैल्हम में शुरू हुआ। यहाँ राजलक्ष्मी जी के मार्गदर्शन से मैंने भरतनाट्यम सीखा तथा अरंगेत्रम भी किया। मुझे आज भी याद है जब मैने B3s में मेरे पहले अंतरसदनीय संगीत और नृत्य में एक मिनट का एकल प्रदर्शनकिया था। वह मंच पर मेरा पहला अनुभव था। मुझे ऐसा लगा मानो मैं एक अलग ही दुनिया में आ गयी हूँ। यह अनुभव बहुत रोमांचक था। इस प्रदर्शन से मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया और मैने नृत्य में अधिक रूचि ली।

आप नृत्य के क्षेत्र में कैसे आई ?

मेरा कभी पढ़ाई में मन नही रमा।शुरू से अंत तक, नृत्य सदैव मेरी प्राथमिकता रही मेरे माता- पिता ने भी मेरा साथ दिया और मुझे प्रोत्साहित किया। और उनकी प्रेरणा से ही मैं नृत्यांगना बनी।

स्कूल के बाद, मैंने प्रदर्शन कला में डिप्लोमा किया तथा कई नृत्य शैलियों का भी अध्ययन किया, जिसमें बैले, जैज़, मार्शल आर्ट और लोक नृत्य शामिल हैं।

वेलहम से जुड़ी कोई यादगार घटना आपको याद आती है ?

हम बहुत शरारती हुआ करते थे। शरारतें करना एच एम से डाँट खाना और फिर शरारत करना और फिर उनका हमी प्रेम से गले लगाना मुझे आज भी बहुत याद आता है ,मुझे अजीब लगता है परन्तु इस जगह से जुड़ा हुआ लगता है। मैंने कभी नही सोचा था कि मुझे अपने ही स्कूल के संस्थापना दिवस के प्रोडक्शन को कोरियोग्राफ करने का मौका मिलेगा। यह वास्तव में एक आनंदपूर्ण अनुभव है।

इतने वर्षों के बाद यहाँ आकर आपको कैसा लगा और वेलहैमाइट्स के लिए आप क्या सन्देश देना चाहती हैं ?

जब मैं यहाँ इतने वर्षों के बाद वापस आई, तो मैंने अनुभव किया कि आज भी वही संस्कार, वही मूल्य, वही अपनत्व और प्रेम हमारे विद्यालय की धरती पर जीवित हैं जो केवल यहाँ से जाने के बाद ही आपको पता चलते हैं। मैं अपनी प्यारी वैल्हमाइट्स से बस इतना ही कहूँगी कि जीवन बिना किसी डर या चिंता के जियो। जो भी करो उसे पूर्ण मनोयोग के साथ करो और अपने आप को पहचानो!

1957 की 10 प्रथम छात्राएँ

प्रथम संपादकीय मण्डल 1963

मुझे आज भी याद है कि हम कैसे ऑरियल हाउस में मस्तियाँ करते थे। प्रधानाचार्या श्रीमती शांति वर्मा, दुत्ता मैम और सलारिया मैम आज भी याद आती हैं। वर्ष भर हम फाउन्डर्स की प्रतीक्षा करते रहते थे। हमारे समय में 50वाँ फाउन्डर था जिसमें मुख्य अतिथि शबाना आजमी जी थी। वैल्हम की सुनहरी यादें मन में हमेशा ही जीवित हैं।

नुपुर गुलाटी (1999 बैच)

मुझे याद है कि विद्यालय हमारे अंदर वह प्रतिभा पहले ही देख लेता था जो आगे जा कर हुमारी सर्वाधिक सहायता करेगी, जो एक बीज हृदय के अंदर वैल्हम प्रस्फुटित कर देता है वह एक विराट वृक्ष बन कर अपनी छाँव में सभी को शीतलता देता है। यहाँ की यादें अविस्मरणीय हैं।

गीतिका शासन भण्डारी (1994 बैच)

बचपन की यादें वैल्हम की बातें

आज भी याद है मुझे अपने माता -पिता का हमें दिन-रात वैल्हम की परीक्षा की तैयारी के लिए भागदौड़ करना, मगर छात्रावास का नाम सुन घबरा जाना, डरते-डरते और मेहनत करते-करते एक पल वह भी आया जब मैंने वैल्हम में प्रवेश पाया, भय और घबराहट मन में लिए और आँखों में हजारों सपने लिए हम अनजान जगह, अनजान लोगों के बीच खुद की जगह् बनाने की आस में हम अपने नए घर, अपने नए परिवार में आ ही गए। साथ में रोते-हँसते ,सपनों को पूरा करते-करते पता ही नही चला कब मैंने नए परिवार अपना लिया और फिर हमने डर को अलविदा कहा और मस्ती को गले से लगाया। यहाँ हमने नियमों के अधीन रहकर मस्ती करना सीखा, पर सब के साथ गलती न मानना तो जैसे आदत सी बन गई थी।

फिर मिला हमे ज्ञान अपने पूजनीय सीनियर्स का जो कुछ ही समय में हमारे लिए आदर्श की मूर्ति बन गए थे। उनके कदमों के निशान जैसे हमारे मार्गदर्शन का सहारा बन गए थे। उनकी एक नज़र जो हम पर पड़ती हम आपने आप को सौभाग्यशाली समझ बैठते और यदि उन्होंने हमारा नाम पुकार दिया तो जैसे हमारी ज़िन्दगी में कोई नया मोड़ आ जाता। एक दिन ऐसा भी आया जब हम भी सीनियर बन गए और नए परिंदों को उड़ने का ज्ञान देने लगे। किस तरह, किस आवाज में, कब ,कहाँ और कैसे अपनी बात को मनवाना है यह हम खुद भी सीख गए और दूसरों को भी सिखाते चले गए। हम कहते रहे कि घर जाना है पर मन से हम विद्यालय के आँगन में रहने के लिए रहे। वैल्हम में मिले इस प्रेम भरे बचपन ने, इन सुख-दुःख के पलों ने, इन लड़ाई-झगड़े के क्षणों ने हमें एक सुंदर परिवार बना दिया। और अब तो यह प्रांगण ही हमारे मुस्कुराने का कारण बन गया है और हमारा गौरव बन चुका है।

नविका जिंदल
कक्षा 8

स्मारिका

हमारे विद्यालय में अनगिनत प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है किन्तु सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगिता है- सुश्री लिनेल अंतर विद्यालयी हिंदी एवं अंग्रेजी वाद विवाद प्रतियोगिता और इस बार तो इस प्रतियोगिता को एक सुंदर नाम प्राप्त हुआ 'स्मारिका'। वैल्हम गर्ल्स ने 4 अगस्त से 6 अगस्त तक प्रतिष्ठित मिस सरोज श्रीवास्तव इंटर-स्कूल हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता की मेजबानी की। 9 स्कूलों ने भाग लिया और हमारे विद्यालय ने अद्भुत प्रदर्शन देते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। चित्रांगदा तिवारी को अंतिम चक्र में विपक्ष की ओर से सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार मिला एवं मनस्वी पंत को द्वितीय सर्वश्रेष्ठ वक्ता का स्थान प्रदान किया गया। वारिजा मांगलिक ने अति उत्तम प्रश्नों से प्रथम चक्र में सर्वश्रेष्ठ प्रतिवादक का स्थान प्राप्त किया। वाद विवाद के प्रथम चक्र का विषय था , "किसी भी देश के विकास का आधार संपन्नता को नही, प्रसन्नता को बनाया जाना चाहिए।" जिसे सभी ने बहुत सराहा।

साहित्यिक यात्रा

मनस्वी पंत तथा समृद्धि ने प्रसिद्ध हिन्दी कवयित्री सुश्री गगन गिल द्वारा आयोजित एक चर्चा में भाग लिया और हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अनेक पक्षों पर ज्ञान प्राप्त किया।

भविष्य के झरोखे से...

दौर

एक दौर यह है,
और एक वह भी था।
जब अकबर ने बीरबल से
ऐसा सवाल पूछा -

कि क्या कहे वह ऐसा ?
जिसे कहने से,
दुःख में सुख मिले
और सुख में पीड़ा।
अक्ल के घोड़े दौड़ाए गए
और छा गया सन्नाटा।

वही खड़ा बीरबल
थोड़ा मुस्कुराया , फिर बोल पड़ा।
कहूँगा मैं कुछ ऐसा ,
जो लाएगा आशा के साथ निराशा,
और निराशा के बाद आशा।

फिर कहने लगा और कहता रहा
" ये दौर भी गुज़र जाएगा।
ये दौर भी गुज़र जाएगा।।"

- श्रीना गुलाटी
कक्षा 10

पोल खोलक यंत्र..

क्या आपने कभी कल्पना की है कि यदि सबकी पोल खोलने वाला पोलखोलक यन्त्र जैसा कुछ हम सबके बीच आ जाये। चलिए फिर देखते हैं कि किस प्रकार वैल्हमाईट्स की वह पोल खोलेगा। तो प्रस्तुत है शिक्षिका और छात्राओं के बीच संवाद जो कि हॉस्पिटल जाने के बहाने से संबंधित है -----

जहाँ के नाम से भी हैं सब घबराते, वहाँ जाने के भी बनाती हैं ये बहाने।
विश्वास नही तो जरा इस पर भी गौर फरमाइए –

इतिहास की कक्षा जैसे ही शुरू हुई, इनके दिमाग में कुछ खुराफात भी शुरू हुई।

शिक्षिका – चलिए सभी इतिहास की किताब निकालिए और पृष्ठ संख्या उन्चास पलट लीजिए। पढ़ने में देना जरा ध्यान, ए लड़की! तुमने लिखा था द्वितीय विश्व युद्ध अकबर और दुर्योधन के बीच में चला था जिसमें चीन विजयी हुआ था। कृपया इस इतिहास विषय पर तरस खाओ और इतना कहना था कि बोली छात्रा

मैम मुझे हॉस्पिटल की चिट जल्दी से दीजिए, मुझपर रहम कीजिए। पढ़ने की नही हो रही हिम्मत मेरी, हॉस्पिटल भेजने में मत कीजिए जरा भी देरी।

शिक्षिका (घबराकर) ज़रा संभलकर! क्या हो गया अचानक ऐसे, अभी तो ठीक थी, फिर ये हो गया पल भर में कैसे? चलो, स्लिप लिखकर देती हूँ और हॉस्पिटल फोन करके भी बोल देती हूँ। तभी आई आवाज एक पोल खोलक यंत्र से- मोहतरमा ! ये क्या कर रही हैं आप? ये तो इनका आराम फरमाने का बहाना है, इनके लिए तो हॉस्पिटल का मौसम ही सुहाना है। दरअसल अगली कक्षा है गणित की इनकी, और उसमें होनी है परीक्षा सबकी। इनका ये प्लान है कि अगला पीरियड इन्फर्मरी में आराम फ़रमाया जाएगा और साथ ही साथ टी० वी० देखने का आनंद लिया जाएगा। फाउन्डर्स की थकान मिटाने की है इनकी तैयारी और गणित की परीक्षा को बंक करने के लिए हुई है ये बीमारी। होमवर्क भी पूरा नही हुआ इनका, जो टीचर ने पिछले वीक था दिया | एक और पोल खोल दूँ, आप की परमिशन हो तो ये सच भी उगल दूँ ?

बेबी का टॉक टाइम भी हो गया है ख़त्म और मम्मी से बात करने का है इनका अब प्रयत्न। हॉस्पिटल में मम्मी का कॉल आएगा और वही लम्बी बातचीत करने का मज़ा आएगा।

तो देखा आपने इस यंत्र ने कैसे सभी कि पोल खोल कर रख दी और विद्यालय में यदि इस यंत्र का पदार्पण हो गया तो न जाने हम वैल्हमाइट्स पर क्या गाज गिरेगी।

श्रीमती अस्मिता एवं श्रीमती अर्चना भट्ट
हिन्दी विभाग

बूझो तो जानो : वैल्हम को पहचानो

आइये देखते हैं कितनी जानकारी रखते हैं अपने विद्यालय के विषय में आप ?

1.जंगली गुलाब कहो या नवाबों की विरासत कहो,
लेकिन अब मुझे कहलाना पसंद है वैल्हम की धरोहर |
वैल्हम की पहचान हूँ मैं, विद्यालय की शान हूँ मैं ,
सब कहते हैं पुरातन होकर भी लगती हूँ , आज भी मैं मनोहर ||

2. गर्मियों का आनंद लेते जहाँ,
सारी टेंशन जैसे मिट जाती यहाँ,
बताओ जल्दी वह जगह है कहाँ,
क्योंकि तुम्हारा मन भी करता जाने का वहाँ |

3. वैल्हम का गुप्त रास्ता है,
जो चुपचाप इस पार से उस पार ले जाता है,
नाम बता सकते हो तुम उसका,
क्योंकि यह स्वादिष्ट खाने ही याद दिलाता है |

4. मन की बातें लिखने की एक जगह है हमारे पास,
वैल्हम में सिंहासन है ऐसा एक खास,
शाहजहाँ के दरबार से लाया गया हमारे पास
तुम सबको आता है वो इतना रास, वहाँ बतियाते रहते हो तुम सब बैठकर आस – पास |

1. नसरीन 2. समर हाउस 3. सबवे 4. पीकॉक थ्रोन

विज्ञान देवता की आरती

जय विज्ञान, जय विज्ञान, जय विज्ञान देवा
माता तेरी मैरी क्यूरी, पिता गैलीलियो देवा
रिचार्ज का भोग लगे, इंटरनेट की सेवा
जय विज्ञान, जय विज्ञान, जय विज्ञान देवा
अज्ञानी को ज्ञान देत, ज्ञानवान को प्रसिद्धि का मेवा,
दुनिया में विश्व व्यापी जाल तेरा, भारत में जिओ की है सेवा |
जय विज्ञान, जय विज्ञान, जय विज्ञान देवा
तू अनंत, दयावंत, सहस्त्र भुजाधारी,
मोबाइल, टैब और लैपटॉप हैं तेरी सवारी |
जय विज्ञान, जय विज्ञान, जय विज्ञान देवा
गूगल की फैली है सब जगह ही माया,
इसके बिना तो मुश्किल में है, हम सब की काया |
जय विज्ञान, जय विज्ञान, जय विज्ञान देवा
तुमसे है विनय एक, हे विज्ञान देवा !
कोई न बन जाए यंत्र "पोल खोलक" देवा |
जान न आ जाए हमारी आफ़त में देवा ,
दीनन की लाज राखो हे विज्ञान देवा |
जय विज्ञान, जय विज्ञान, जय विज्ञान देवा

श्रीमती कुसुम डंडोनाएवं श्रीमती अर्चना भट्ट
हिन्दी विभाग

सुर्खियाँ

- विद्यालय की बास्केट-बॉल टीम ने 'चौथे बास्केट-बॉल डायमंड जुबली टूर्नामेंट में प्रथम स्थान प्राप्त कर सबका मन मोह लिया।
- कक्षा 12 की 9 छात्राओं ने सितंबर में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय 'राउंड स्क्वायर' सम्मेलन में भाग लिया । और उनका साथ हमारी आदरणीय प्रधानचार्या सुश्री विभा कपूर और सुश्री कमल हांडा ने भी दिया था।
- वैल्हम की १२ छात्राओं ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय शास्त्रीय नृत्य, भरतनाट्यम, को फ्रिंज फेस्टिवल नामक एक समारोह में प्रदर्शित करके हमारे विद्यालय को गौरवान्वित किया।

संपादक मण्डल

प्रभारी शिक्षिका - डॉ ऋतु पाठक
मुख्य सम्पादिका - मनस्वी पंत

सहायक मंडल

- शाम्भवी चंद्रा
- नविका जिंदल
- साँची मालपानी
- समृद्धि
- भव्या संघल

चित्रकार

- प्रार्थना पंकज
- अद्विका जैन
- अनुष्का अग्रवाल
- अनायना अग्रवाल
- अनन्या गुप्ता

विशेष आभार:

श्रीमती कुसुम डन्डोना
श्रीमती सीमा सागर एवं समस्त हिंदी विभाग

आज मुक्त कर मन के बंधन,
करो ज्योति का जय का वंदन।
स्नेह अतुल धन, धन्य यह भुवन,
बन कर स्नेह गीत लहराओ।

कर्मयोग कल तक के भूलो,
जीवन-सुमन सुरभि पर फूलो।
छवि छवि छू लो, सुख से झूलो,
जीवन की नव छवि बरसाओ।

ये अनंत के लघु लघु तारे,
दुर्बल अपनी ज्योति पसारे।
अंधकार से कभी न हारे,
प्रतिमन वही लगन सरसाओ।

"क्षितिज परिवार "